International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 03(I), July - September, 2022, pp. 39-42

नाथावत राजपूतों की स्थापत्य कला का प्रतीक चौमूँहागढ़ दुर्ग

रजनी मीना*

प्रस्तावना

राजस्थान अपनी कला व संस्कृति के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। राजस्थान को किलों (दुर्गों) का घर कहते हैं। मानव संस्कृति के इतिहास में स्थापत्य का अपना स्वतन्त्र स्थान है। राजस्थान राजपूत शासकों का निवास होने के कारण 'राजपूताना' नाम से जाना जाता है। राजस्थान में राजपूत राज्यों की स्थापना के साथ ही स्थापत्य कला का भी विकास शुरू हो गया था। राजपूतों की वीरता के कारण राजस्थान के स्थापत्य में शौर्य की भावना स्पष्टतः दिखाई देती है।[1] मध्यकाल में बाह्य आक्रमण होने लगे तो राजस्थानी स्थापत्य में शौर्य के साथ–साथ सुरक्षा की भावना का भी समावेश किया गया और विशाल एवं सुदृढ़ दुर्ग बनवाने आरम्भ कर दिये। राजपूतों ने दुर्गों का निर्माण अधिकतर पहाड़ियों पर ही किया, क्योंकि वहाँ शत्रुओं के विरुद्ध प्राकृतिक सुरक्षा के साधन उपलब्ध थे। इसके साथ ही गहरी नदियों के किनारे अथवा मैदानी क्षेत्रों में भी दुर्ग बनाये जाते थे।

राजस्थान में दुर्गों का निर्माण निवास, सुरक्षा, सामग्री संग्रहण के लिए व आक्रमण के समय जनता, पशु तथा सम्पत्ति के संरक्षण हेतु किया जाता था।[2]

राजपूत शासक दुर्गों का निर्माण करने को अपने शौर्य व शान का प्रतीक मानते थे। मेवाड़ में महाराणा कुम्भा ने 84 किलों में से 32 का अकेले ही निर्माण करवाया।

चौमूँ शहर जो भारत के राजस्थान राज्य के जयपुर जिले में स्थित है, चौमूँ शहर का इतिहास जयपुर शहर से भी पुराना है। चौमूँ के प्रसिद्ध किले को राजस्थान में ही नहीं बल्कि पूरे देश में अपनी ऐतिहासिक परम्परा, गौरवशाली इतिहास व अपनी सांस्कृतिक महत्व की विरासत के कारण जाना जाता है।

जयपुर राज्य के उच्च कोटी के सामन्त जो है इतिहास में 'नाथावत–राजपूतों' के नाम से प्रसिद्ध हुये ये जयपुर के कच्छवा वंश के महाराज 'पृथ्वीराज' के बेटे 'गोपालाजी' के वंशज थे जिन्होंने जयपुर शहर से 33 कि. मी. दूर उत्तर में चौमूँ शहर को बसाया और नाथावत राजपूत शाखा की स्थापना की। चौमूँ शहर में स्थित 'चौमूहाँ गढ़' अपनी अजेयता व स्थापत्य कला के लिए सम्पूर्ण राजस्थान में प्रसिद्ध है। नाथावत शासकों का जयपुर रियासत की समकालीन राजनीति में बहुत प्रभाव रहा है।[3]

चौमूँ ढूँढाड़ अंचल का एक प्रमुख कस्बा है, जिसके नामकरण का आधार वहाँ का किला चौमूँहागढ़ के नाम से प्रसिद्ध है। चौमूँ का इतिहास लगभग 450 साल पुराना है।[4]

चौमूँ का किला

चौमूँ का प्रसिद्ध किला 'भूमि दुर्ग' की श्रेणी में आता है। अन्य प्रसिद्ध किलों की तरह चौमूँ के किले के सम्बन्ध में जनश्रुति है कि जिस स्थान को किले के निर्माण के लिए चुना गया था वहाँ कैर के पेड़ के नीचे भेड़ ने अपने बच्चे को जन्म दिया। रातभर हिंसक जानवरों ने भेड़ को परेशान किया पर भेड़ ने उनसे रातभर अपने बच्चे की सुरक्षा हेतु संघर्ष किया अन्त में हिंसक जानवर हार कर चले गये। इस अजेय जगह का दृश्य देखकर संत बेणीदास के आशीर्वाद से चौमूँ 'ठाकुर कर्णसिंह' ने वि. संवत् 1652–54 (1595–97 ई.) के लगभग इस सुदृढ़ दुर्ग की नींव रखी। सुदृढ़ प्राचीर विस्तृत और गहरी खाई, आलीशान महल एवं महत्वपूर्ण सामरिक स्थिति के कारण इसका जागीरी ठिकानों के किलों में विशेष स्थान और महत्व रहा है। चौमूँहागढ़ का किला धागधार

* शोधार्थी, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टोंक, राजस्थान।

गढ़ के नाम से भी प्रसिद्ध रहा है। महाराज कर्णसिंह के शासन कार्य के बाद महाराज रघुनाथसिंह द्वारा इसमें बुर्ज तथा अनेक भवन बनवाये गये। उनके शासन काल में इसे 'रघुनाथगढ़' भी कहा गया। चौमूँ के परवर्ती शासकों द्वारा भी किले में निर्माण और विस्तार का कार्य जारी रहा तथा प्रायः प्रत्येक शासक ने इसमें अपना योगदान दिया। ठाकुर मोहन सिंह ने इसकी सुदृढ़ प्राचीर तथा किले के चारों तरफ गहरी नहर या पारिखा का निर्माण करवाया।[5]

बीते जमाने में सहान वन तथा कंटीली झाड़ियों से आवृत यह किला जमीन की ढलान पर बना है, अतः शत्रु द्वारा किले की सही स्थिति का अनुमान कर उस पर निशाना लगाना बहुत कठिन था। किले को लक्ष्य कर दागे गये तोप के गोले उसे हानि पहुँचाये बिना ऊपर से निकल जाते थे। उस जमाने के प्रसिद्ध आक्रन्ता 'रजाबहादुर' तथा 'समरू बेगम' ने चौमूँ के इस किले पर बांडी नदी के मुहाने से गोले बरसाये पर किले का पतन नहीं हो सका।

किले के चारों और परकोटे के अन्दर और परकोटे के बाहर आबादी बसी हुई थी। किले में कई आलीशान महल व भवन बने हुये हैं। शिल्प व स्थापत्य की दृष्टि से इन महलों में 'ढूँढ़ाड शैली' के प्रतिनिधि सजीव और कलात्मक भित्ति चित्र बने हुये है। इन महलों में विशेषकर 'देवी निवास' महल जयपुर के 'अल्बर्ट हॉल' की प्रतिकृति की तरह लगता है। चौमूँ गढ़ में मंगल पोल पर गणेशजी का मन्दिर हाथियों के ठाण के पास मोहनलालजी का मंदिर एवं किले के सामने सीतारामजी का मन्दिर है। यहाँ बुर्ज परकोटे के अलावा रतन निवास, कृष्ण निवास, शीशमहल, मोती महल आदि का निर्माण करवाया। 1798 में कृष्णसिंह ने चौमूँ गढ़ का परकोटा बनवाया, जिस पर रात और दिन संगीनों का पहरा रहता था। यहाँ पर ध्रुव दरवाजा, बावड़ी दरवाजा, पीआला दरवाजा व होली दरवाजा भी बड़े मशहूर रहे हैं। ठाकुर मोहन सिंह ने परकोटे के अन्दर विशाल नहर बनवायी। महारानी उदावतजी ने चौमूँहागढ़ का 'मोती महल' बनवाया जो जयपुर के सीटी पैलेस के शीशमहल के समान प्रतीत होता है। रानी रतन कँवर ने यहाँ 1726 ई. लक्खी बावड़ी (बनजारों की बावड़ी) का निर्माण करवाया[6]

चौमूँ के किले का अधिकांश निर्माण भारतीय हिन्दु शास्त्रों के अनुसार सम्पन हुआ। संवत 1776 में सम्पूर्ण दुर्ग की खाई (नहर) का निर्माण किया गया। संवत् 1780 में 'उदावतजी की कोठी' का निर्माण किया गया। ठाकुर कर्णसिंह ने चौमूँ किले के चारों दिशाओं में दरवाजों का निर्माण करवा कर यहाँ सभी जातियों के लोगों को बसाया व व्यवसायिक दृष्टि से शहर को आबाद किया। चौमूँहागढ़ के मंगल पोल पर भगवान गणेश जी का मन्दिर स्थित है। जो चौमूँ शहर का सबसे प्राचीन मन्दिर है।[7]

पंडित हनुमान शर्मा ने अपने द्वारा लिखित नाथावतों के इतिहास में चौमूँ के किले का वृत्तान्त देते हुए लिखा है कि इसके स्थापत्य में हमारे शिल्प शास्त्रों में भूमि दुर्ग के लिए अपेक्षित सभी आदर्शों का निर्वाह या समावेश हुआ है। दुर्ग की तफसील इस तरह है :–

किले की दीवारों का विस्तार	:	3077 फीट
किले की दीवारों की ऊँचाई	:	23 फीट
किले की चौड़ाई	:	7 से 15 फीट

किले के शिरोभाग की बनावट में सर्वत्र कमल फूल की पत्ती है और प्रत्येक पत्ती में तीन, तमंचे, तोप या बन्दूक चलाने के 5–5 छिद्र है। बुर्जों की चौड़ाई और ऊँचाई अन्य किलों के समान है।[8]

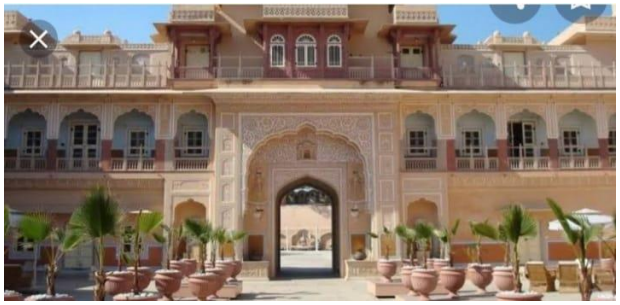

वस्तुतः कौटिल्य ने एक अच्छे भूमि दुर्ग में जो लक्षण बताये वे सब चौमूँ के इस किले में विद्यमान है। किले के अनेक भवनों में रनिवास, सेवकों के आवासगृह, रथसाल–घोड़ों की पायगें जनानी ज्योड़ी, मर्दाना ज्योड़ी, नकारा खाना, पुस्तकालय भवन, संगीतखाना इत्यादि विशाल व कलात्मक भवन बने हुये है। जयपुर की बसावट से प्रेरणा लेते हुए चौमूँ के सामन्त शासकों ने अपने यहाँ भी चौपड, त्रिपोलिया तथा कटला बाजार विकसित किये। चौमूँ का किला स्थापत्य की दृष्टि से 'राजपूत–मुस्लिम व पाश्चात्य शैली' में बना हुआ है जिसको स्पष्टतः 'देवी निवास' में देखा जा सकता है। चौमूँ किले में ढूँढ़ाड चित्रकला का प्रयोग बड़े पैमाने पर किया गया है। किले की दीवारों व छत्तें पर राधाकृष्ण के चित्र राजशाही चित्र, रामायण के चित्र, भगवतगीता के चित्रों का बड़े पैमाने पर समावेश किया गया है।[9]

किले में दीवाने आम, दीवाने खास अपनी मनोरम कलात्मकता के लिये प्रसिद्ध है। रानियों के निवास गृह भी अपने भित्ती चित्रों के लिए प्रसिद्ध है। महलों की सुन्दर चित्रकारी, अलंकृत जालियाँ और भव्य झरोखे बड़े ही मनोरम है। चौमूँ का यह विशाल किला अपनी कलात्मक स्थापत्य कला व सृदढ़ता के लिए सम्पूर्ण राजस्थान में प्रसिद्ध है।

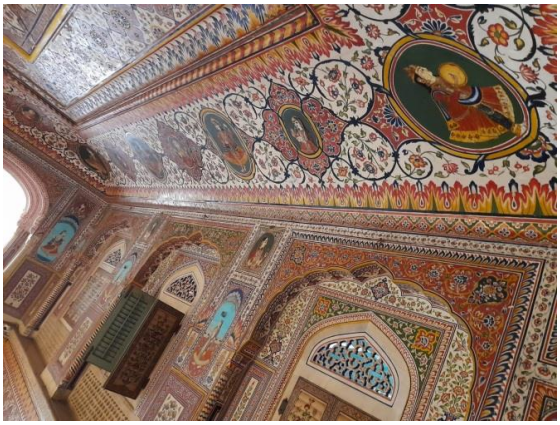

वर्तमान में गढ़ परिसर हेरिटेज होटल में तब्दील हो चुका है। यहाँ बॉलीवुड की फिल्मों की शुटिंग का कार्य भी वर्तमान में हो रहा है। आबादी में अतिक्रमण से यह किला धीरे–धीरे अपने मौलिक स्वरूप खो रहा है। यह ऐतिहासिक महत्व का स्थल आज भी अपनी 400 साल पुराने के इतिहास का जीवन्त बनाये हुये है।[10]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इण्डिया (पश्चिमी भारत की यात्रा) : कर्नल जेम्स टॉड, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, 1665 ई., जोधपुर, पृ. 337
2. बांकीदास री स्यात, कवि बांकीदास, 1792 ई., जोधपुर, पृ. 289
3. मध्यकालीन राजस्थान में ठिकाना व्यवस्था, विक्रम सिंह भाटी, 2004 ई., जोधपुर, पृ. 104–106
4. राजस्थान के तीर्थ एवं दर्शनीय स्थल, रामदत्त शर्मा, 1994 ई., भिवाडी (हरियाणा), पृ. 76
5. नाथावतों का इतिहास, पं. हनुमान प्रसाद शर्मा, 2009 ई. (राजस्थान ग्रन्थागार, जोधपुर) पृ. 211, पृ. 78
6. वही, पृ. 223, पृ. 243
7. ढूँढ़ाड क्षेत्र का इतिहास, डॉ. रेणु मीणा (राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी) 2017 ई. पृ. 109, पृ. 123
8. जयपुर राज्य का इतिहास, पं. हनुमान प्रसाद शर्मा, 1937 ई., जयपुर, पृ. 84, पृ. 206
9. राजस्थान के ऐतिहासिक दुर्ग, मोहन लाल गुप्ता, 2017 ई. (जोधपुर), पृ. 108, पृ. 112
10. जयपुर राज्य का इतिहास, चन्द्रमणि सिंह, 2008 ई., जोधपुर।

❖◆❖